بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-11.03.2022 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. का एक अत्यधिक बड़ा काम ख़िलाफ़त के चुनाव के समय मुस्लिम उम्मत को एकता एवं सहमति की लड़ी में पिरोना है।

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. को ख़िलाफ़त के बाद पेश आने वाली कठिनाईयों का संक्षिप्त वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 11 मार्च 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

हज़रत अबू बकर रज़ी. को ख़िलाफ़त के बाद जिन कठिनाईयों का सामना करना पड़ा, उनका वर्णन हो रहा था। उनमें पहली कठिनाई जो बयान की गई थी वह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन का दुःख था। यह पहला संकीर्ण तथा भयावह अवसर था जब सारे सहाबा दुःख के कारण दीवाने हो रहे थे। हज़रत उमर रज़ी. तो तलवार लेकर खड़े हो गए थे कि यदि किसी ने कहा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का देहान्त हो गया है तो मैं उसका सिर शरीर से अलग कर दूँगा। उस समय हज़रत अबू बकर रज़ी. ने फ़रमाया कि जो व्यक्ति मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इबादत करता था वह सुन ले कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निधन हो चुका है और जो कोई अल्लाह तआला से मुहब्बत करता है वह ख़ुश हो जाए कि अल्लाह तआला जीवित है एवं कभी नहीं मरेगा। बावजूद उस अत्यंत स्नेह के जो आप रज़ी. को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से था, आप रज़ी. ने तौहीद ही का पाठ पढ़ाया, अत्यंत साहस तथा विवेक से सहाबियों को सांत्वना दी। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि वह विचार धारा जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन के बारे में कुछ सहाबियों के दिल में पैदा हो गई थी (हज़रत अबू बकर रज़ी. ने) एक सार्वजनिक सभा में क़ुर्आन शरीफ़ की आयत का हवाला देकर उन समस्त विचार धाराओं को दूर कर दिया।

दूसरा बड़ा काम जो आप रज़ी. ने किया वह ख़िलाफ़त के चुनाव के समय मुस्लिम उम्मत को एकमत तथा एकता की लड़ी में पिरोना है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन से जो दूसरी बड़ी शंका उत्पन्न हुई वह सक़ीफ़ा बनी सअदा में अन्सार का इज्तिमा था। अन्सार किसी रूप में मुहाजिरों में से ख़लीफ़ः स्वीकार करने को तय्यार नहीं थे। उस संकीर्ण अवसर पर अल्लाह तआला ने हज़रत अबू बकर रज़ी. की ज़बान में वह प्रभाव उत्पन्न किया कि मतभेद एवं बिखराव की अवस्था स्नेह एवं एकता में बदल गई।

तीसरा बड़ा मामला जिसे आप रज़ी. ने तुरन्त संभाला वह उसामा रज़ी. की सेना रवानगी का मामला था। यह सेना शाम देश की सीमा पर रोमियों से लड़ाई के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तय्यार की थी। इस सेना का नेतृत्व हज़रत उसामा रज़ी. को सौंपते हुए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उसामा रज़ी. को विस्तार पूर्वक निर्देश भी दिए थे। इसी प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने पवित्र हाथों से एक झंडा भी बांधा। उस सेना में हज़रत अबू बकर रज़ी. व उमर रज़ी. सहित बड़े बड़े सहाबी शामिल थे। जब कुछ लोंगों ने इस प्रकार की बातें कीं कि यह लड़का महान मुहाजिर सहाबियों पर अमीर बनाया जा रहा है तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बड़े नाराज़ हुए। हज़रत उसामा रज़ी. सेना को लेकर जब रवाना हुए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने अन्तिम की बीमारी से ग्रस्त थे। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन पर यह सेना जुर्फ़ याज़ी ख़श्ब नामक स्थान से वापस मदीना आ गया। जब हज़रत अबू बकर रज़ी. की बैअत कर लो गई तो आप रज़ी. ने आदेश दिया कि उसामा का अभियान अवश्य पूरा होगा। उसामा की सेना में से कोई व्यक्ति मदीना में शेष न रहे। इस सेना में सैनिकों की संख्या तीन हज़ार बयान की जाती है तथा एक अन्य रिवायत में सात सौ की संख्या का भी वर्णन मिलता है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन पर जहाँ अरब क़बीलों में इस्लाम से विमुखता का विद्रोह फैल रहा था वहीं यहूदी व नसरानी भी अपनी गर्दनें उठा उठा कर देख रहे थे। इन स्थितियों में हज़रत अबू बकर रज़ी. को इस सेना को भेजने की कार्यवाही को रोक लेने का सुझाव दिया गया। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने ख़ुदा की क़सम खा कर फ़रमाया कि यदि मुझे विश्वास हो कि जंगली जानवर मुझे नोच खांएगे तो भी मैं उसामा की सेना के विषय में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा जारी निर्णय को लागू करके रहूँगा।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु उसामा की सेना को भिजवाने की पृष्ठभूमि के विषय में फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ी. ने फ़रमाया कि तुम यह चाहते हो कि रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन के पश्चात अबू क़हाफ़ा का बेटा सबसे पहला काम यह करे कि जिस सेना को रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रवाना होने का आदेश दिया था, उसे रोक ले? ख़ुदा की क़सम! यदि दुश्मन की सेनाएँ मदीना में घुस आँए तथा कुत्ते मुसलमान महिलाओं के शवों को घसीटते फिरें तब भी मैं इस सेना को नहीं रोकूँगा ... ... यह साहस तथा निर्भयता हज़रत अबू बकर रज़ी. में इसी कारण से पैदा हुई कि ख़ुदा ने फ़रमाया है कि- مُّحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ जिस तरह बिजली के साथ हलका सा तार भी छू जाए तो उसमें महामान्य शक्ति पैदा हो जाती है, इसी प्रकार मुहम्मद रसूलुल्लाह की संगत के परिणाम स्वरूप आप स. के मानने वाले भी أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ की पुष्टि करने वाले बन गए।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उसामा के नेतृत्व में सेना भिजवाने के बारे में सिर्रुलख़िलाफ़ः नामक पुस्तक में फ़रमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निधन हुआ

तथा यह सूचना मक्का तथा वहाँ के गवर्नर अताब बिन उसैद को पहुंची तो अताब छिप गया और मक्का काँप उठा, सम्भव था कि उसके निवासी इस्लाम से विमुख हो जाते।

ऐसी स्थिति में लोगों ने हज़रत उमर रज़ी. से निवेदन किया कि वे हज़रत अबू बकर रज़ी. को उसामा की सेना को रवाना कराने से रोक लें अथवा यदि सेना को रवाना करें तो उसामा से बड़ी आयु के किसी व्यक्ति को अमीर नियुक्त फ़रमाएँ। हज़रत उमर रज़ी. ने जब यह बात हज़रत अबू बकर रज़ी. से कही तो आप रज़ी. ने उमर रज़ी. की दाढ़ी को पकड़ा और कहा कि ऐ इब्ने ख़त्ताब! तेरी माँ तुझे खोए, रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे अमीर नियुक्त किया है और तुम मुझे कहते हो कि मैं उसे नेतृत्व से हटा दूँ।

इस सेना की रवानगी का दृश्य भी अत्यंत अद्भुत था। उस समय हज़रत उसामा रज़ी. सवार थे जबकि हज़रत अबू बकर रज़ी. पैदल चल रहे थे। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने हज़रत उसामा रज़ी. से कहा कि यदि आप उचित समझें तो हज़रत उमर रज़ी. को मेरे कामों में सहयोग के लिए छोड़ दें, हज़रत उसामा रज़ी. ने अनुमति दे दी। इसके बाद हज़रत उमर रज़ी. जब भी हज़रत उसामा रज़ी. से मिलते तो कहते- اَلسَلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْاَمِيْرُ

हज़रत अबू बकर रज़ी. ने उसामा की सेना को भिजवाते समय सम्बोधन करते हुए फ़रमाया कि मैं तुम्हें दस बातों की नसीहत करता हूँ- तम विश्वासघात न करना, युद्ध में हाथ आए माल की चोरी मत करना, वादे के विरुद्ध मत करना, किसी शव को नहीं कुचलना, किसी छोटे बच्चे महिला अथवा वृद्ध पुरुष की हत्या मत करना, किसी फलदार वृक्ष को न काटना, किसी बकरी गाय अथवा ऊँट की खाने के अतिरिक्त हत्या न करना, चर्च के लिए आरक्षित सन्यासियों को छोड़ देना, यदि तुम्हें कोई व्यक्ति कुछ खाने के लिए भेंट करे तो बिस्मिल्लाह पढ़ कर खा लेना, ऐसे लोग जो बीच में से अपने बाल साफ़ किए हों तथा चारों ओर पट्टियों के रंग में बाल हों, उन्हें मत छोड़ना। ये लोग मुसलमानों के विरुद्ध युद्ध के लिए उकसाने वाले तथा युद्ध में भाग लेने वाले लोग थे।

हज़रत अबू बकर रज़ी. ने हज़रत उसामा रज़ी. से फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो तुम्हें करने का आदेश दिया था, वह अवश्य करना। यह सेना रबीउल अव्वल के अन्त में रवाना हुई तथा बीस रातों की यात्रा के बाद उबना वालों पर अचानक हमला करके उनसे पिछले अत्याचारों का बदला लेने में सफल रही। युद्ध में हाथ आई अत्यधिक सम्पत्ति प्राप्त करके जब हज़रत उसामा रज़ी. वापस मदीना पहुंचे तो हज़रत अबू बकर रज़ी. मुहाजिरों तथा मदीना वालों के साथ उनसे मिलने के लिए बाहर निकले।

उसामा की सेना को भिजवाने से बड़े दूर गामी परिणाम प्रकट हुए। समस्त लोगों ने जान लिया कि ख़लीफ़ः का निर्णन कितना उचित, समय पर तथा लाभकारी था और वे जान गए कि हज़रत अबू बकर रज़ी. अति दूर दृष्टि रखने वाले तथा विवेक वाले थे। अरब के क़बीलों पर मुसलमानों की धाक बैठ गई। अरब की सीमाओं पर दृष्टि लगाए विदेशियों पर मुसलमानों का रौब बैठ गया। प्रसिद्ध बर्तानवी लेखक सर थामिस वाकर ऑर्नाल्ड लिखता है कि यह उन भव्य एवं विराट अभियानों में से पहला अभियान था जिसके द्वारा मुसलमान शाम, ईरान तथा उत्तरी अफ़रीक़ा पर विजय पा गए तथा पुराने फ़ारसी शासन को नष्ट किया तथा रोमी शासन के पंजे से उसके सर्वोत्तम राज्यों को स्वतंत्र करा लिया।

एक चुनौती जो हज़रत अबू बकर रज़ी. को पेश आई वह ज़कात के धन को रोकने तथा इंकार करने का विद्रोह था। इस्लाम से विमुख होने की विभिन्न अवस्थाओं में से एक अवस्था यह थी कि लोग इस्लाम पर तो स्थापित रहे किन्तु ज़कात के अनिवार्य होने तथा उसे अवश्य रूप में ख़लीफ़ः को ही देने से इंकार किया। बड़े

बड़े सहाबियों से विचार विमर्श के बाद हज़रत अबू बकर रज़ी. ने फ़रमाया- वल्लाह ! यदि ज़कात देने के इंकारी लोग एक रस्सी देने से भी इंकार करेंगे जिसे वे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में दिया करते थे तो भी मैं उनसे युद्ध करूँगा।

ज़कात का इंकार करने वालों के व्यवहार, उनके साथ लड़ाई तथा उसके परिणाम का वर्णन आगे बयान करने का इरशाद फ़रमाने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आज फिर मैं दुनिया के मौजूदा हालात के बारे में दुआ के लिए कहना चाहता हूँ। ख़ुदा दोनों ओर के शासकों को बुद्धि दे तथा ये लोग मानवता का ख़ून करने से रुक जाएँ। मुसलमानों को भी इस युद्ध से पाठ सीखना चाहिए कि किस तरह ये लोग एक हो गए हैं परन्तु मुसलमान बावजूद कलिमा पढ़ने के कभी एक नहीं होते। एक देश का विनाश किया, इराक़ नष्ट कराया, सीरिया नष्ट कराया, यमन का विनाश हो रहा है तथा ग़ैरों से कराते हैं और ख़ुद भी कर रहे हैं, बजाए इसके कि एक हों। कम से कम मुसलमान यह एकता का ही पाठ इनसे सीख लें। अल्लाह तआला मुस्लिम क़ौम पर भी दया करे, मुसलमानों पर भी रहम करे, उम्मते मुस्लिमा पर कृपा करे तथा यह उसी अवस्था में हो सकता है जब ये लोग ज़माने के इमाम को मानने वाले भी हों और जो इसी उद्देश्य के लिए अल्लाह तआला ने इस ज़माने में भेजा है। अल्लाह तआला बुद्धि तथा समझ प्रदान करे तथा साथ ही जहाँ ये अपनी हालतें ठीक करने वाले हों वहाँ दुनिया के लिए दुआ भी करें और अपने माध्यम तथा साधनों को उपयोग में ला कर दुनिया का युद्धों से रोकने वाले भी हों, न कि स्वयं युद्ध में शामिल होने वाले।

ख़ुत्बः के अंत में हुज़ूर अनवर ने मोहतरमा सय्यदा क़ैसरा ज़फ़र हाशमी साहिबा पतनी ज़फ़र इक़बाल हाशमी साहब लाहौर का सद्वर्णन तथा जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने का ऐलान फ़रमाया। मरहूमा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत सय्यद मुहम्मद अली बुख़ारी साहब की पोती थीं। मरहूमा जमाअत की सेवा करने वाली, नमाज़ रोज़े की पाबन्द, दुआएँ करने वाली, मेहमानों की देख भाल करने वाली, अति संतोषी एवं आभार प्रकट करने वाली थीं। परिजनों में पति के अतिरिक्त पाँच बेटे तथा एक बेटी शामिल हैं। मरहूमा के एक बेटे महमूद इक़बाल हाशमी साहब, कैम्प जेल लाहौर में असीर राह-ए-मौला (अल्लाह की राह में संघर्ष करते हुए बन्दी बनाए गए) हैं। इनको जेल से निकले की अनुमति तो नहीं मिली किन्तु इनके साथ प्रशासन ने यह व्यवहार किया कि वालिदा की मय्यत को जेल ले जाकर उन्हें वालिदा का अन्तिम दर्शन करा दिया। अल्लाह तआला उनकी भी रिहाई का जल्दी सामान फ़रमाए, आमीन। हुज़ूर अनवर ने मरहूमा की मग़फ़िरत तथा दर्जात की बुलन्दी के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ
اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ
مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ
وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131